गद्य - खण्ड

द्विअंकीय प्रश्न -

(1) देवता इसका त्याग सरलता से नहीं कर पाते है इसलिए धर्म हीन तथा देव - दुर्लभ त्याग कहलाता है।

(2) इसका आशय यह है कि दुनिया का काम होता है किसी - न - किसी पर बोलते रहना। रात के समय में भी वे यही काम करते है।

(3) मियाँ की दुकान जामा मस्जिद के पास थी।

(4) मियाँ का खानदानी पेशा नानबाई बनाने का था वह अपनी आजीविका के लिए दुकान चलाते थे जहाँ पर वह नानबाई बनाते थे यह एक विशेष प्रकार की रोटी होती है

(5) नमक का दरोगा कहानी का मुख्यपात्र वंशीधर थे हमे प्रभावित करता है। वंशीधर एक ईमानदार, दृढ निश्चयी, कर्मठ तथा कर्तव्यपरायण व्यक्ति है। उन्हे अपने कार्य से प्रेम है। वे आदर्शो को मानने वाले व्यक्ति है।

(6) मास्टर त्रिलोक सिंह ~~और लोहार गंगाराम~~ के दण्ड देने के लिए बच्चो को अपने पसन्द की बेंत चुनने की छूट देता था। और लोहार गंगाराम स्वयं बेंत चुनते थे।

(7) ऊँचे दर्रो और कठिन रास्तो के कारण इतिहास में स्पीति का वर्णन कम रहा है। अलंघ्य भूगोल यहाँ इतिहास का एक बड़ा कारक है। यहाँ आवागमन के साधन नही है। यह पर्वत श्रेणियो से घिरा हुआ है। साल में आठ - नौ महीने बर्फ रहती है तथा यह भाग शेष संसार से कटा रहता है।

ASK classes

Scanned with CamScanner

(9) संवेदनशील विषयों में ऐसे कार्य को मना करना चाहिए ताकि उस कारण से किसी को हानि नहीं हो और अगर ऐसे गम्भीर मामले हमारे सामने आए तो हमें बड़े अफसरों के सहयोग से कार्य करना चाहिए।

(11) पके हुए आदमी ने एक शेर बोलकर सुनाया - हमने माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन खाक हो जाएंगे हम, तुमको खबर होने तक न देंगे। इस बात को सुनकर माली चकित हुआ, यह जानकर कि पका हुआ आदमी एक गुमनाम शायर है।

(12) कृषि विभाग वाले ने मामले को हॉर्टिकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे तर्क दिए की कृषि विभाग अनाज तथा खेती - बाड़ी के विषय से संबंधित मामलों में फैसला करता है। वह फलदार वृक्ष के मामले में फैसला नहीं कर सकता है। अतः यह एग्रीकल्चर के स्थान पर हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेन्ट के अन्तर्गत आएगा।

(13) नेहरू जी भारत के सभी किसानों को भारत माता की जय के विषय में प्रश्न बार-बार करते थे। उनसे पूछते थे जिसकी जय करते हो वे कौन है।

(14) भारतमाता के प्रति नेहरू जी की अवधारणा किसानों से बिल्कुल अलग थी। उनका मानना था की हमारे देश की धरती, खेत, पहाड़, जंगल, झरने इत्यादि इसके अंग है। मगर भारत के सभी लोग जो पूरे देश में है इसी मायनों में ये ही भारतमाता है।

Scanned with CamScanner

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-परिचय

मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म सन् 1880 में वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका बचपन का नाम धनपत राय था, किन्तु वे अपनी कहानियाँ उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लिखते थे और हिन्दी में मुंशी प्रेमचंद के नाम से।

गरीब परिवार में जन्म लेने तथा अल्पायु में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उनका बचपन अत्यधिक कष्टमय रहा। किन्तु जिस साहस और परिश्रम से उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा, वह साधनहीन एवं कुशाग्रबुद्धि और परिश्रमी छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद है।

प्रारम्भ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में अध्यापक रहे। बाद में शिक्षा विभाग में सब-डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए। कुछ दिनों बाद असहयोग आन्दोलन से सहानुभूति रखने के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और आजीवन साहित्य-सेवा करते रहे। उन्होंने कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसके बाद उन्होंने अपना प्रेस खोला तथा 'हंस' नामक पत्रिका भी निकाली। सन् 1936 में उनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय

मुंशी प्रेमचंद जी ने लगभग एक दर्जन उपन्यासों एवं तीन सौ कहानियों की रचना की उन्होंने 'माधुरी' एवं 'मर्यादा' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा 'हंस' एवं 'जागरण' नामक पत्र भी निकाले। उनकी रचनाएँ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं, जिनमें सामान्य जीवन की वास्तविकताओं का सम्यक् चित्रण किया गया है। समाज-सुधार एवं राष्ट्रीयता उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं।

Scanned with CamScanner

रचनाएँ

प्रेगचन्द जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'सेवासदन', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'गोदान' आदि हैं। उनकी कहानियों का विशाल संग्रह आठ भागों में 'मानसरोवर' नाम से प्रकाशित है, जिसमें लगभग तीन सौ कहानियाँ संकलित हैं। 'कर्बला', "संग्राम' और 'प्रेम की वेदी' उनके नाटक हैं। साहित्यिक निबंध 'कुछ विचार' नाम से प्रकाशित हैं। उनकी कहानियों का अनुवाद संसार की अनेक भाषाओं में हुआ है। 'गोदान' हिन्दी का एक श्रेष्ठ उपन्यास है।

Scanned with CamScanner

भाषा

मुंशी प्रेमचंद जी उर्दू से हिन्दी में आए थे; अत: उनकी भाषा में उर्दू की चुस्त लोकोक्तियों तथा मुहावरों के प्रयोग की प्रचुरता मिलती है।

मुंशी प्रेमचंद भाषा सहज, सरल, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार एवं प्रभावशाली है तथा उसमें अद्भुत व्यंजना-शक्ति भी विद्यमान है। मुंशी प्रेमचंद जी की भाषा पात्रों के अनुसार परिवर्तित हो जाती है।

मुंशी प्रेमचंद की भाषा में सादगी एवं आलंकारिकता का समन्वय विद्यमान है। 'बड़े भाई साहब', 'नमक का दारोगा', 'पूस की रात' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

शैली

इनकी शैली आकर्षक है। इसमें मार्मिकता है। उनकी रचनाओं में चार प्रकार की शैलियाँ उपलब्ध होती है। वे इस प्रकार हैं- वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक तथा विवेचनात्मक। चित्रात्मकता मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषता है।

'मन्त्र' मुंशी प्रेमचंद जी की एक मर्मस्पर्शी कहानी है। इसमें विरोधी घटनाओं, परिस्थितियों और भावनाको का चित्रण करके मुंशी प्रेमचंद जी ने कर्तव्य-बोध का अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न किया है। पाठक मंत्र-मुग्ध होकर पूरी कहानी को पढ़ जाता है। भगत की अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण मनोदशा, वेदना एवं कर्तव्यनिष्ठा पाठकों के मर्म को लेती है।

Scanned with CamScanner

शेखर जोशी

जन्म - सितम्बर 1932, अल्मोड़ा जनपद के ओलिया गांव में।
1955 में 'धर्मयुग' कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
सम्मान-पुरस्कार :'पेड़ की याद' शब्द-चित्र-संकलन के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी-संस्थान का महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार 1987।
प्रकाशन - कोसों का घरवार, साथ के लोग, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, मेरा पहाड़ (कहानी-संग्रह) पेड़ की याद (शब्द-चित्र)
संपर्क - 100 लूकर गंज, इलाहाबाद

शेखर जोशी का संक्षिप्त परिचय- सितम्बर १९३२ में अल्मोड़ा जनपद के ओजिया गाँव में जन्मे श्री शेखर जोशी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर और देहरादून में हुई। कथा लेखन को दायित्वपूर्ण कर्म मानने वाले जोशी हिंदी के सुपरिचित कथाकार हैं। उन्हें उ०प्र० हिंदी संस्थान द्वारा महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार-१९८७, साहित्य भूषण-१९९५ पहल सम्मान-१९९७ से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी कहानियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, चेक, रूसी, पोलिश और जापानी भाषाओँ में अनुवाद किया जा चुका है। कुछ कहानियों

Scanned with CamScanner

जापानी भाषाओँ में अनुवाद किया जा चुका है। कुछ कहानियों का मंचन और 'दाज्यू' नमक कहानी पर बाल-फिल्म सोसायटी द्वारा फिल्म का निर्माण किया गया है। आपकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं-कोशी का घटवार, साथ के लोग, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, मेरा पहाड़, प्रतिनिधि कहानियाँ और एक पेड़ की याद। दाज्यू, कोशी का घटवार, बदबू, मेंटल जैसी कहानियों ने न सिर्फ़ शेखर जोशी के प्रशंसकों की लम्बी जमात खड़ी की बल्कि नई कहानी की पहचान को भी अपने तरीके से प्रभावित किया है। पहाड़ी इलाकों की गरीबी, कठिन जीवन संघर्ष, उत्पीड़न, यातना, प्रतिरोध, उम्मीद और नाउम्मीद्दी से भरे औद्योगिक मज़दूरों के हालात, शहरी-कस्बाई और निम्नवर्ग के सामाजिक-नैतिक संकट, धर्म और जाती में जुडी घटक रूढ़ियाँ- ये सभी उनकी कहानियों का विषय रहे हैं।

Scanned with CamScanner